श्री हरि वायु गुरुभ्यॊ नमः ॥
अज्ञाननाशाय विज्ञानपूर्णाय
सुज्ञानदात्रे नमस्तॆ गुरॊ
श्री राघवॆंद्रार्य श्री राघवॆंद्रार्य
श्री राघवॆंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ १ ॥
आनंदरूपाय नंदात्मज श्री
पदांभॊजभाजॆ नमस्तॆ गुरॊ ।
श्री राघवॆंद्रार्य श्री राघवॆंद्रार्य
श्री राघवॆंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ २ ॥
इष्टप्रदानॆन कष्टप्रहाणॆन
शिष्टस्तुत श्री पदांभॊज भॊ
श्री राघवॆंद्रार्य श्री राघवॆंद्रार्य
श्री राघवॆंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ ३ ॥
ईडॆ भवत्पादपाथॊजमाध्याय
भूयॊ पि भूयॊ भयात पाहि भॊ
श्री राघवॆंद्रार्य श्री राघवॆंद्रार्य
श्री राघवॆंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ ४ ॥
उग्रं पिशाचादिकं द्रावयित्वाशु
सौख्यं जनानां करॊषीश भॊ
श्री राघवॆंद्रार्य श्री राघवॆंद्रार्य
श्री राघवॆंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ ५ ॥

www.yousigma.com

ऊर्जत्कृपापूर पाथॊनिधॆ मंक्षु
तुष्टॊनुगृह्णासि भक्तान विभॊ
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ ६ ॥
ऋजूत्तम प्राण पादार्चन प्राप्त
माहात्म्यसंपूर्णसिद्धॆश भॊ
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ ७ ॥
ऋजुस्वभावाप्तभक्तॆष्ठकल्पद्रु
रूपॆशभूपादिवंद्य प्रभॊ
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवॊंद्रार्य
श्री राघवॊंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ ८ ॥
ॠद्धंयशस्तॆ विभाति प्रकृष्टं
प्रपन्नार्तिहंतर्महॊदार भॊ
श्री राघवॊंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवॊंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ ९ ॥
क्लृप्तातिभक्तौघ काम्यार्थदात
र्भवांभॊधिपारंगत प्राज्ञभॊ ।
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवॊंद्रार्य
श्री राघवॊंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ १० ॥
ऎकांतभक्ताय माकांतपादाब्ज

www.yousigma.com

उच्चाय लोके नमस्ते विभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ११ ॥
ऐश्वर्यभूमन महाभाग्यदायिन
परेषां च कृत्यादि नाशिन प्रभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १२ ॥
ओंकार वाच्यार्थभावेन भावेन
लब्धोदयश्रीश योगीश भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १३ ॥
और्वानलप्रख्य दुर्वादि दावानलैः
सर्वतंत्र स्वतंत्रेश भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १४ ॥
अंभोज संभूत मुख्यामराराध्य
भूनाथभक्तेश भावज्ञ भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १५ ॥
अस्तंगतानेक मायादिवादीश
विद्योतिताशेषवेदांत भो

www.yousigma.com

श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १६ ॥
काम्यार्थदानाय बद्धादराशेष
लोकाय सेवानुसक्ताय भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १७ ॥
खद्योतसारेषु प्रत्यर्थिसार्थेषु
मध्याह्नमार्तांडबिंबाभ भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १८ ॥
गर्विष्ठ गर्वांबुशोषार्यमात्युग्र
नम्रांबुधेर्यामिनीनाथ भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ १९ ॥
घोरामयध्वांत विध्वंसनोद्धाम
देदीप्यमानार्कबिंबाभ भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २० ॥
ङणत्कार दंडांक काषाय वस्त्रां
क कौपीन पीनांक हंसांक भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य

www.jousigma.com

श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २१ ॥
चंडीश कांडेश पाखंडवाक्कांड
तामिस्रमार्तांड पाषंड भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २२ ॥
छद्माणुभागं न विद्मस्त्वदंतः
सुसध्मैव पद्माधवस्यासि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २३ ॥
जाड्यं हिनस्ति ज्वरार्शः क्षयाद्याशु
ते पादपद्मांबुलेशोऽपि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २४ ॥
झषध्वजीयेष्वलभ्योरुचेतः
समारूढमारूढवक्षोंग भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २५ ॥
जांचाविहीनाय यादृच्छिक प्राप्त
तुष्टाय सद्यः प्रपन्नोऽसि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ २६ ॥

www.yousigma.com

टीकारहस्यार्थ विख्यापनग्रंथ
विस्तारलॊकॊपकर्तः प्रभॊ
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ २७ ॥
ठंकुवरीणाममॆय प्रभावॊ
द्धरापार संसारतॊ मां प्रभॊ
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ २८ ॥
डाकिन्यपस्मारघॊरादिकॊग्र
ग्रहॊच्चाटनॊदग्रवीराग्र्य भॊ
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ २९ ॥
ढक्कादिकध्वान विद्रावितानॆक
दुर्वादिगॊमायुसंघात भॊ
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ ३० ॥
णात्मादिमात्रर्णलक्ष्यार्थक श्री
पतिध्यान सन्नद्धधीसिद्ध भॊ
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ ३१ ॥
तापत्रय प्रौढबाधाभिभूतस्य

www.sousigma.com

भक्तस्य तापत्रयं हंसि भॊ
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ ३२ ॥
स्थानत्रय प्रापकज्ञानदातः
स्त्रिधामांघ्रिभक्तिं प्रयच्च प्रभॊ
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ ३३ ॥
दारिद्र्य दारिद्र्य यॊगॆन यॊगॆन
संपन्नसंपत्तिमाधॆहि भॊ
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ ३४ ॥
धावंति तॆ नामधॆयाभिसंकीर्त्य
नॆनैनसामाशु वृंदानि भॊ
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ ३५ ॥
नानाविधानॆक जन्मादि दुःखौघ
तः साध्वसं संहरॊदार भॊ
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभॊ ॥ ३६ ॥
पाता त्वमॆवॆति माता त्वमॆवॆति
मित्रं त्वमॆवॆत्यहं वॆद्मि भॊ

www.yousigma.com

श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३७ ॥
फालस्तुदुर्दैववर्णावलीकार्य
लोपेऽपि भक्तस्य शक्तोऽसि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३८ ॥
बद्धोऽस्मि संसारपाशेन तेंऽघ्रीं
विन्याऽन्यागतिर्नेत्यवेमि प्रभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३९ ॥
भावे भजामीह वाचा वदामि त्व
दीयं पदं दंडवत स्वामि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४० ॥
मान्येषु मान्योसि मत्या च धृत्या च
मामद्य मान्यं कुरु द्राग विभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४१ ॥
यं काममाकामये तं न चापं
ततस्त्वं शरण्यो भवत्येमि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य

www.jousigma.com

श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४२ ॥
राजादिवश्यादि कुक्षिंभरानेक
चातुर्यविद्यासु मूढोऽस्मि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४३ ॥
लक्षेषु ते भक्तवर्गेषु कुर्वेकलक्ष्यं
कृपापांगलेशस्य मां
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४४ ॥
वारांगनाद्यूत चौयान्यदारारतत्वाद्यवद्यत्वतो
मां प्रभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४५ ॥
शक्तोन शक्तिं तव स्तोतुमाध्यातु -
मीदृक्वहं किं करोमीश भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४६ ॥
षड्वैरिवर्गं ममाराान्निराकुर्व
मंदो हरेरांघ्रिरागोऽस्तु भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४७ ॥

www.yousigma.com

सन्मार्गसच्छास्त्र सत्संग सद्भकिसज~
जान संपत्तिमाधेहि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४८ ॥
हास्यास्पदोहं समानेष्वकीर्त्या
तवांघ्रिं प्रपन्नोऽस्मि संरक्षभो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४९ ॥
लक्ष्मीविहीनत्व हेतोः स्वकीयैः
सुदूरीकृतोऽस्म्यद्य वाच्योऽस्मि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ५० ॥
क्षेमंकरस्त्वं भवांभोधिमज्ज
ज्जनानामिति त्वां प्रपन्नोस्मि भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ५१ ॥
कृष्णावधूतेन गीतेन मात्रक्ष
राद्येन गाथास्तवेनेढ्य भो
श्री राघवेंद्रार्य श्री राघवेंद्रार्य
श्री राघवेंद्रार्य पाहि प्रभो ॥ ५२ ॥
भारती रमण मुख्यप्राणांतर्गत श्री कृष्णार्पणमस्तु

www.yousigma.com